शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह- सितंबर, 2022

अष्ठम वर्ष अंक - 04

HAPPY Teacher's Day

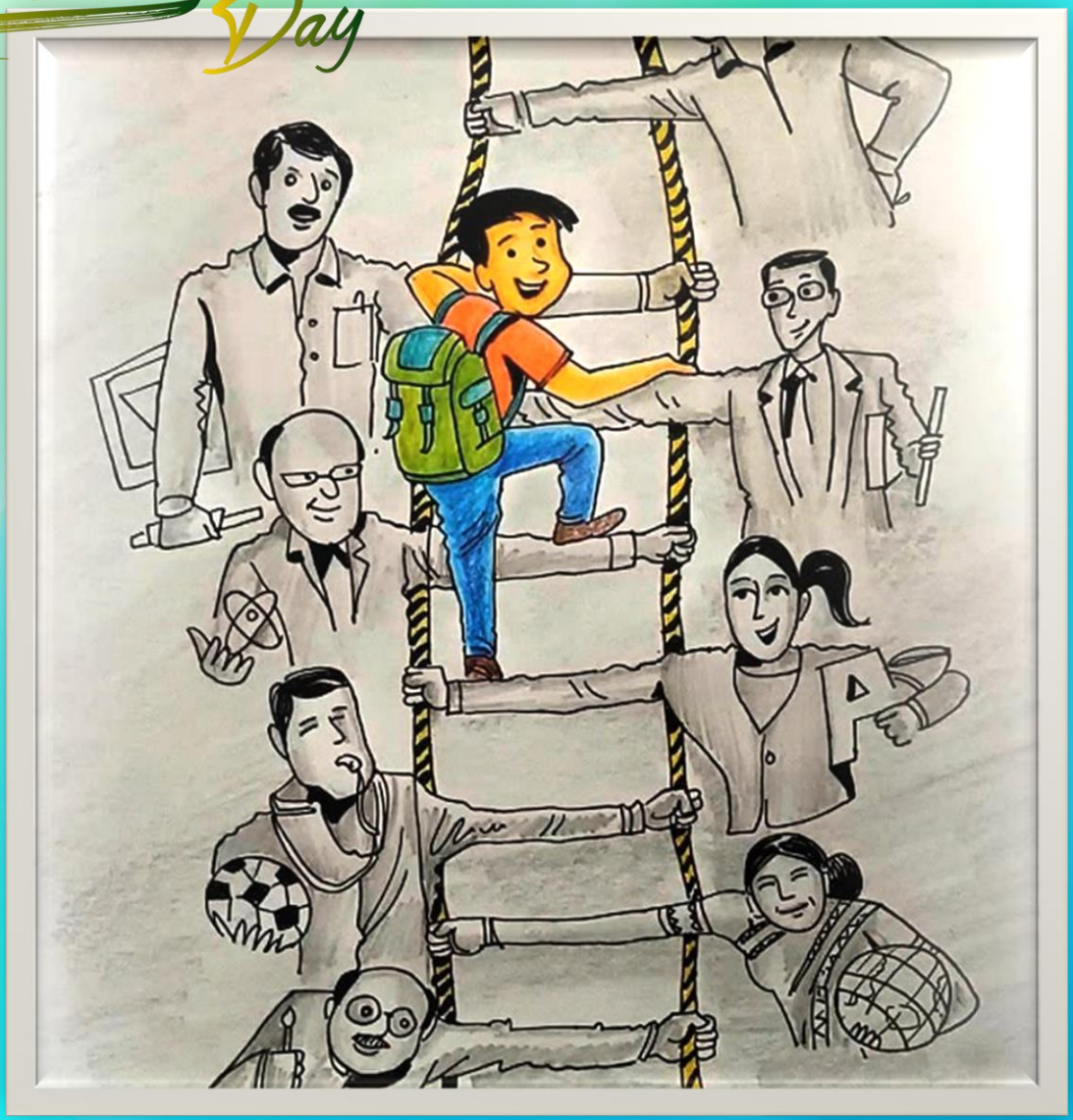

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: सेवानिवृत्त शिक्षकों/ अधिकारियों द्वारा विद्यादान

डॉ. श्रीमति मनीषा हिरपुरकर
पशु चिकित्सा विस्तार अधिकारी, विकास खंड दुर्ग
सेवा काल -1988-2018 (30 वर्ष)- 99818 94768

ये हैं डॉ मनीषा हिरपुरकर, जीवन के 30 साल नौकरी करने के बाद इन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेनी पडी क्योंकि उन्हें कैंसर जैसी असाध्य बीमारी ने घेर लिया था। कई सर्जरी और निरंतर कीमोथेरेपी के बाद मनीषा जी को नया जीवन मिला। बीमारी के इस दौर ने उनके सोचने का दिशा परिवर्तन किया, उन्हें लगता था कि ये जीवन अब सार्थक कार्यों में लगाने के लिए मिला है, पशु चिकित्सा विस्तार अधिकारी रहते हुए इन्हें दुर्ग के विभिन्न गांवों में कार्य किया है जिससे इन्हें गाँव में बच्चों और पालकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता में कमी दिखाई देती थी। ये शिक्षा के क्षेत्र में कुछ कार्य करना चाहती थी, तब इनका साथ दिया हनोदा के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला में कार्यरत प्रज्ञा मैडम ने जिन्हें ये अपनी छोटी बहन मानतीं है। पहले मनीषा जी ने धन से मदद की, फिर प्रज्ञा जी ने उन्हें अपने स्कूल में आमंत्रित किया और बच्चों को पढ़ाने का प्रस्ताव दिया, जिसके बाद मनीषा जी हनोदा के विद्यालय में निःशुल्क सेवा देने आ रही हैं। पढ़ाने का जज्बा ऐसा है कि घनघोर बारिश में भी वे स्कूल आना नहीं छोड़ती, एक शिक्षक का पूर्ण कर्तव्य वे बखूबी निभा रही हैं, यदि कभी बाहर जाना भी हो तो अपना कार्य समय पर पूरा करके ही जाती हैं, आकलन और मूल्यांकन भी वे करती हैं, बच्चों से बहुत लगाव रखती हैं और पढ़ाई के साथ-साथ उन्हें नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी दे रही हैं, उनका सेवा भाव व बच्चों से लगाव सदा अनुकरणीय है।

नाम - श्री राधेश्याम शर्मा
पद - सेवानिवृत्त प्रधान पाठक
शाला - पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुनकुनी विकासखंड खरसिया (रायगढ़)
सेवा काल - 02-09-1978 से 31-5-2022 (43 वर्ष 9 माह)
9826317630

श्री राधेश्याम शर्मा जी अपनी सेवानिवृत्ति के उपरांत भी शाला प्रबंधन समिति से जुड़े हुए हैं। इसके अंतर्गत प्रधान पाठकों सहायक शिक्षकों अभिभावकों एवं छात्र छात्राओं से सतत एवं जीवन संपर्क कर रहे हैं एवं उनके साथ चर्चा में हिस्सा लेते रहते हैं। साथ ही ग्रामीण जनप्रतिनिधियों से भी वे लगातार भेंट करते रहते हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी शर्मा सर शिक्षा से संबंधित कार्यों को लेकर दुगनी तन्मयता से काम कर रहे हैं।

शर्मा सर ने ना सिर्फ स्कूली शिक्षा में रुझान दिखाया है बल्कि नई शिक्षा नीति पर आधारित FLN पर भी कार्य प्रारंभ कर दिया है। इसके अंतर्गत बुनियादी शिक्षा की पहल शिक्षा में बुनियादी सुधार के लिए एक कारगर कदम होगा। आंगनबाड़ी केंद्रों को स्कूलों से जोड़ना तथा बालवाड़ी, कक्षा 1 एवं 2 के बच्चों में गणित एवं भाषा की समझ विकसित करने के प्रति इनकी रुचि है। इस कार्य की पहल हेतु शर्मा सर ने प्राथमिक विद्यालय एवं आंगनबाड़ी केंद्रों के अध्यापकों कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं से भेंट व चर्चा उनकी शाला में जाकर करना प्रारंभ किया है साथ ही स्थानीय स्कूली कार्यक्रमों में भाग लेना माताओं का उन्मुखीकरण कार्यशाला के प्रति रुझान बढ़ाना अपना मुख्य उद्देश्य लेकर चल रहे हैं जो कि अत्यंत प्रेरणादायक है।

श्री मुबारक हुसैन
प्रधानपाठक शा. उ. मा.हथबंद
विकास खंड बालौदा बाजार
सेवा काल 1981-2022 (41वर्ष) 9753319497

मुबारक हुसैन जी जो अपने शिक्षक कार्य में 41 साल नौकरी करने के बाद भी बच्चों को नियमित पढ़ाते हैं। हुसैन जी के द्वारा आसपास के 20 गांव में शिविर लगाकर साक्षरता अभियान, पल्स पोलियो, स्वच्छता अभियान, वृक्ष रोपण, नशा मुक्ति एवं सामाजिक सेवा में शिक्षक कार्य के साथ वह पूर्ण रूप से कार्य करते हैं और गांव में ही रह कर वह गांव के शिक्षा स्तर को बढ़ाने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

शिक्षा की कार्य करते हुए दो बार ऐसा दौर भी आया जिसमें उनका ट्रांसफर कहीं और हो रहा था परंतु गांव वाले हुसैन जी के शिक्षा के प्रति समर्पण भाव को देखकर उसके ट्रांसफर को निरस्त करा कर गांव में ही पुनः कार्यभार संभालने के लिए मिला। अभी 30 जून 2022 को उसका शिक्षक की कार्य संपन्न हुआ फिर भी वह गांव के बच्चे को निरंतर शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

श्रीमति कमलेश तिवारी
रिटायर्ड व्याख्याता मिश्री देवी कन्या शाला पेंड्रा
सेवा काल- 1982-2022(40 वर्ष)
मोबाइल - 7354405428

श्रीमती कमलेश तिवारी ने अपना पूरा सेवाकाल अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाने हुए बहुत परेशानियों को पार कर अपना जीवन यापन किया है । पूरी सत्य, निष्ठा ,इमानदारी व मेहनत से अध्यापन कार्य किया है। इनकी प्रथम पद्स्थापना 10 दिसम्बर 1982 में सहायक शिक्षक के रूप में पेंड्रा विकासखंड में हुई और तब से आज तक सेवानिवृति के बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहीं है। ये सामाजिक गरीब बच्चों को शिक्षा भी देती है, जिससे उनकी मदद हो सके और उनका भविष्य उज्जवल हो सके, इन्होने संस्कृत विषय पढ़ने के लिए भी बच्चो को प्रोत्साहित किया है ,ये साप्ताहिक अपनी इच्छा से विद्यालयों में पढ़ाने भी जाती है । जिससे बच्चो को तथा विद्यालय को भी सहायता और ज्ञान प्राप्त होता है , इन्होने संस्कृत में एम ए किया है तथा इनको इस विषय में दक्षता प्राप्त है और इनकी कोशिश रहती है कि हमारी प्राचीन और सभ्यता की भाषा संस्कृत को बढ़ावा मिले तथा अभी की पीढ़ी इसका महत्व समझे । ये बच्चों को संस्कृत को संस्कृत सिखाने अभी भी पूर्ण सेवा भाव से शिक्षा में योगदान दे रही हैं ।

नाम- दिलहरण प्रसाद तिवारी
प्रोफेसर कॉलोनी रायपुर रोड बेमेतरा छ.ग. सेवानिवृत्त दिनांक- 31/06/2006
सेवानिवृत्त व्याख्याता एवं योगाचार्य
मो. # 9425563767

शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बेमेतरा से सेवानिवृत्त होने के बाद से निशुल्क अध्यापन कार्य उसी विद्यालय में करते आ रहे हैं। सेवानिर्वित्त होने के बाद निरंतर सेवा में रहने का यह उनका 17 साल चल रहा है।

शासकीय सेवा एक शिक्षक के रूप में 45 वर्षों तक कार्य किया उसके बाद 17 वर्ष को जोड़ा जाए तो 65 वर्षों तक निरंतर सेवा में संलग्न हैं। डाइट बेमेतरा के माध्यम से हजारों शिक्षकों को योग का प्रशिक्षण दे चुके हैं और अभी भी MT के रूप में काम कर रहे हैं। प्रतिदिन बेमेतरा नगर में उनकी पांच कक्षा योगाभ्यास की चल रही है पूरे जिले में गांव गांव में योग की कक्षाएं उनके मार्गदर्शन में संचालित हो रही है वे एक अच्छे साहित्यकार भी हैं। उन्होंने अपनी उन्होंने जन कल्याण के लिए बहुत सी कविताएं भी लिखे हैं जिनका प्रयोग में विद्यालय में या योग कक्षाओं में प्राय: करते रहते हैं।

श्रीमति संध्या मण्डल
परियोजना अधिकारी, महिला एवम् बाल विकास विभाग
सेवा निवृत्त स्थान . पेण्ड्रा (G.P.M), सेवाकाल- 1979 से 2017, मोब - 9424248293

मैं संध्या मंडल, सन 1982 में अपनी पढाई पूरी कर महिलाओं एवं बच्चों के सेवा के लिए महिला बाल विकास में पर्यवेक्षक के पद पर ज्वाइन किया। मेरी शिक्षा उस समय हुई जब लड़कियों को शिक्षा से दूर दूर का कोई नाता नहीं रहता था। विशेषकर ग्रामीण अंचलों में जब अपने कार्य के दौरान मैं महिलाओं एवं बालिकाओं के संपर्क में आई तो मैंने उस समय उनके मन में पढ़ने की चाहत देखी। आर्थिक अभाव के कारण जो बालिकाएं एवं महिलाएं आगे पढ़ नहीं पा रही थी मैंने उनकी मदद कर उन्हें आर्थिक सहयोग दिया। इनमें से कुछ महिलाओं को नौकरी मिल गई है, जिसकी मुझे अपार खुशी है। वर्तमान में सेवानिवृत्त होने के पश्चात मैं अपनी एक दुकान चलाती हूं तथा उसे जो भी आय होती है कुछ ऐसी बालिकाओं के पढ़ाई में लगाती हूं। जनकपुर में जिन लड़कियों की मैंने मदद की, उनमें से एक ने अभी अभी आईटीआई कंप्लीट कर लिया है। मुझे जब भी समय मिलता है, मैं बच्चों को पढ़ाने का काम करती हूं। भविष्य में भी मेरा लक्ष्य रहेगा जो बालिका आर्थिक अभाव के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रही हैं उनकी मैं आर्थिक सहायता करूंगी और उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग करूंगी।

श्रीमती नीला बोगी मुंडू
सेवानिवृत्त प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोचवाय गरियाबंद (छ.ग.)
सेवा काल: 1987-2022 (34 वर्ष) मोबाइल: 9981485835

इन्होने सेवानिवृत्ति के उपरांत भी छात्र हित में ऑनलाइन कक्षा के द्वारा कक्षा बारहवीं के छात्रों का कृषि संकाय अध्यापन निरंतर जारी रखा है। जो आदिवासी अंचल के जरूरतमंद गरीब छात्र हैं जिनके परिवार में कोई उन्हें सही दिशा नहीं दे रहे हैं उनका निरंतर काउंसलिंग कर रही है तथा उनके अंदर शिक्षा के प्रति एवं रोजगार हेतु जागरूकता उत्पन्न कर रही है। नशा मुक्ति, गलत गतिविधियां, शिक्षा से संबंधित, रोजगार से संबंधित बातों पर विचार विमर्श करना तथा उन्हें सही दिशा निर्देश प्रदान करने का भी कार्य श्रीमती नीला बोगी मुंडू कर रही है। ऐसे छात्र जो प्रतियोगी परीक्षा में शामिल होते हैं उन्हें विषय के सही चयन तथा उस विषय का भविष्य क्या होगा इस विषय पर जागरूकता उनके द्वारा छात्रों को प्रदान की जाती है। वे अपने आपको गौरवान्वित महसूस करती है कि उनके छात्र आज भी उनसे पूरे दिल से जुड़े हुए हैं, उनके कार्यकाल के बहुत से छात्र शासकीय सेवा के उच्च पदों पर पदस्थ हैं जो निश्चित ही उनके लिए गर्व का विषय है। उनके पूरे सेवाकाल में उन्होंने अनुशासन को महत्व दिया प्रतिदिन चार से पांच कालखंड का अध्यापन सेवानिवृत्ति के पश्चात भी छात्र हित में करती रही है।

रंजीत सारथी
प्रा. शा. लिबरा (प्रधान पाठक)
रिटायर्ड 2017-18
Mobile No. : 7987249743

श्री रंजीत सारथी अपने सेवानिवृत्ति के बाद भी अपने भाषा के विकास के लिए अपना जीवन समर्पित कर रहे हैं। जब कभी भी अवसर मिलता है वे अपने भाषा से संबंधित साहित्य के विकास के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। उन्होंने बच्चों के लिए बहुत सी कहानियों का सरगुजिहा भाषा में अनुवाद किया है। उन्होंने साक्षरता के लिए नव-साक्षर के भाग-1, 2 का लेखन का कार्य भी किया है। 2017-18 मे रिटायर्ड होने के बाद सरगुजा की लोकल कहानी को हमर सरगुजा युथ के माध्यम से यु-ट्युब विडियो मे वाचन करा रहे है। लोक संस्कृति को बढावा देने के लिए सरगुजा संस्कृति के लोक गीत, तौहार गीत का कार्य कर रहे है। प्राथमिक स्तर पर सरगुजिहा भाषा में अनुवाद की हुई द्विभाषी पुस्तक के निर्माण में भी इनकी सक्रिय भूमिका रही है।

समय समय पर वे रायपुर आकर भी सरगुजा भाषा में अनुवाद कर प्रूफ-रीडिंग का कार्य करते रहते हैं और सरगुजिहा भाषा में उनकी लिखी कहानियों एवं कविताओं को पुस्तकों में स्थान दिया गया है।

श्री प्रभु राम गंगबोईर
ग्राम–नरबदा, पोस्ट–दर्रा,
तह.–गुरूर, जिला–बालोद
9098190634

श्री प्रभु राम गंगबोईर पोस्टिंग 1980 , शिक्षक जिला बालोद से प्रथम नियुक्ति में सुकमा के निकट छिंदगढ़ विकासखंड के लेदा गांव में हुआ। छोटे से गांव में बहुत ही बीहड़ में विभिन्न समस्या को पार करते हुए सेवा देते रहे। वहाँ पहले तो स्वयं को व्यवस्थित एवं अनुकुलित किये फिर लोगों को जागरूक करने का कार्य किये। कुछ वर्षों के उपरांत उनका स्थानांतरण कांकेर जिले चारामा विकासखंड के छोटे से ग्राम में हुआ। यहा साक्षरता अभियान , बच्चों के खेल तथा पढ़ाई के लिए अग्रणी भूमिका निभाई। यहाँ उन्होंने जीवन के प्रति सही समझ बनाने जीवन विद्या का अध्ययन किया। बालोद जिला स्थानांतरण हुआ एवं 30/01/2020 ग्रा.कुलिया , वि खं से प्रधानपाठक के रूप में सेवानिवृत्त हुए एवं अभी गृह ग्राम माध्यमिक शाला नरबदा गुरूर जिला बालोद मे गणित में विशेष रूचि होने के कारण वर्तमान में अपनी सेवा स्कूल को देते है।

बच्चो को गणित सरलता से हल करना बताते है। योग में तहसील - स्तरीय योग ट्रेनर के रूप में कार्य किये। सर बच्चों को नवोदय विद्यालय आदर्श विद्यालय आदि के लिए भी तैयारी करवाते थे और बहुत से बच्चों का इन स्कूलों में चयन भी हुआ। खेल में भी सर जी रूचि थी जिसके कारण संभाग स्तरीय तक बच्चों को खेल में पहचान मिली।

श्री रामजी देवांगन
सेवानिवृत्त प्रधान पाठक
विकासखण्ड- पाटन
जिला- दुर्ग (छत्तीसगढ़)
सेवा काल -30 वर्ष
मोबाइल 889247989

शासकीय प्राथमिक शाला मज़ार चौक सेलूद से प्रधानपाठक के पद से सेवानिवृत्त हुए श्री राम जी देवांगन जी का अधिकांश समय बच्चों और विद्यालय के सतत प्रगति की तरफ सदा ही लगा रहा है। प्रधान पाठक के रूप में आपने अनेक नए प्रगतिशील बदलाव शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर करते आ रहे हैं। शायद यही कारण है कि देवांगन जी आज भी विद्यालय के लिए आप समय निकलकर अपना योगदान रहे हैं। आपके घर के समीप अन्य विद्यालय शासकीय प्राथमिक शाला सेलूद में गुणवत्ता बनाए रखने के लिए समय - समय पर बच्चों व शिक्षकों को अपना मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। विद्यालय की समस्त थीम आधारित गतिविधियों पर आपका विशेष सहयोग प्राप्त होता है।

कहानी कथन उत्सव, बच्चों को मातृभाषा में शिक्षण, कविता – कहानी सृजन, लेखन कौशल, कठपुतली कला, सांस्कृतिक गतिविधियों, व्यावसायिक दक्षता व कौशल को निखारने में आपका योगदान सहज रूप से मिलता रहा है। आपके द्वारा प्रत्येक वर्ष बच्चों को गोद लेकर उनके पठन- पाठन के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई जाती रही है। इसके अतिरिक्त विद्यालय को संबल बनाने हेतु हर पग में आप विद्यालय के शिक्षा विद के रूप में सतत योगदान देते आ रहे हैं। 'सेलूद शिक्षा एक्सप्रेस' पीएलसी में आपके मार्गदर्शन से न सिर्फ सेलूद को अपितु कई अन्य विद्यालयों को भी लाभ पहुँचा। शाला परिवार आपके अथक प्रयास व विद्यालय के प्रति आपके जुड़ाव का सदा से कृतज्ञ रहा है।

हमारे आसपास विभिन्न विभागों से सेवानिवृत्त ऐसे बहुत से व्यक्ति मिल जाएंगे जो शारीरिक रूप से अभी भी स्वस्थ हैं और खाली रहने से उनके मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जानकारी के अभाव या संकोच की वजह से वे अपने समय एवं अनुभव के सदुपयोग हेतु अपनी सेवाएं निकट के स्कूल में नहीं दे पा रहे हैं। ऐसे में हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम अपनी शाला में बच्चों की शिक्षा में इनसे सक्रिय सहयोग ले सकें। उन्हें इस बाबत संपर्क कर पूरा सम्मान देते हुए अपने स्कूल के लिए उनका अमूल्य समय माँगा जा सकता है। उनकी इच्छा, रुचि एवं समय के आधार पर उनसे शिक्षादान हेतु समय माँगा जाना चाहिए। कोरोना से हुई क्षतिपूर्ति हेतु भी इनकी सेवाएं शाला समय से अतिरिक्त समय में ली जानी चाहिए। इस अंक में हम ऐसे ही कुछ सेवानिवृत्त व्यक्तियों द्वारा दिए जा रहे योगदान से आपका परिचय करवा रहे हैं। ऐसे सभी साथियों का विवरण हमें विद्यान्जली के वेबसाईट में अपलोड करना चाहिए। इनकी सेवाएं हम शिक्षकों के क्षमता विकास में भी ले सकते हैं। ऐसा करने से शालाएं प्रभावित नहीं होंगी।

एजेंडा दो: चित्र पर चर्चा

हम एक के बाद एक प्रतिमाह बच्चों का आकलन कर रहे हैं। कापियां जाँच कर उनके ग्रेड ऊपर भेज रहे हैं, एंट्री कर रहे हैं !

- क्या ऐसा करने मात्र से स्थितियां सुधर जाएँगी ?
- जब डॉक्टर को किसी बीमारी के बारे में जानना हो तो वह बहुत से टेस्ट कर उसके परिणाम को देखता है और इलाज के बारे में प्लान करता है।
- हममें से कितने साथी इसे मात्र एक औपचारिकता मानकर डाटा को उच्च कार्यालयों में भेज देते हैं ?
- हममें से कितने लोग इन परिणामों को देखकर प्रत्येक बच्चे एवं कक्षा के परिणाम सुधारने हेतु योजना बनाते हैं ?
- हम कब तक स्कूल-आधारित आकलन की ओर जा सकेंगे ?

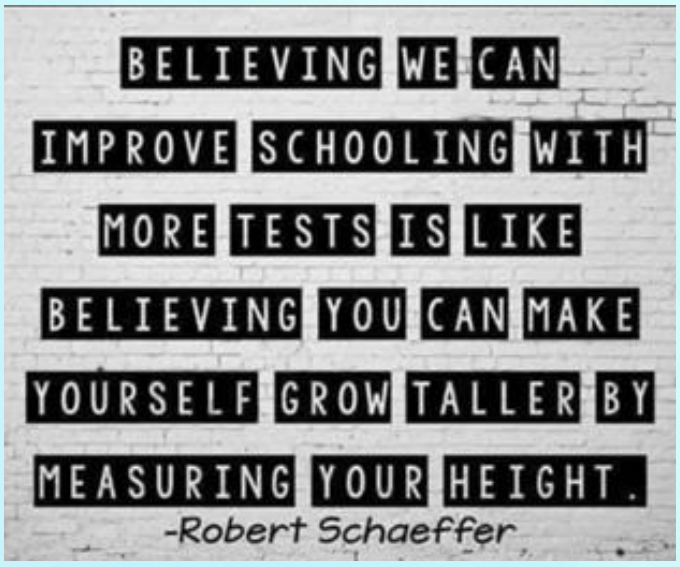

एजेंडा तीन: बच्चे कहाँ हैं ?

हमारी शालाओं में शाला त्याग एक प्रमुख समस्या है | बच्चे विभिन्न कार्यों से हमारी शालाओं से विलग हो जाते हैं| कुछ बच्चे विशेष मौसम में अपने परिवार के साथ पलायन कर जाते हैं और फिर वापस स्कूल में आकर प्रवेश ले लेते हैं | ऐसे में उनकी पढाई पर बहुत बुरा प्रभाव पडता है | वे न तो आगे की समझ पाते हैं और न ही पिछला उन्होंने सीखा होता है | ऐसे में उनका कक्षा में सिखाए जा रहे बिन्दुओं पर समझ लाना एक दुष्कर कार्य बन जाता है | और कक्षा में कुछ भी समझ में नहीं आने से धीरे-धीरे वे शाला त्याग की ओर बढ़ने लगते हैं |

उमेश अपनी बहन मानती के साथ दूसरों के गाय चराने का काम करता था| इनके पिताजी के देहांत एवं माता के दूसरी शादी करने के बाद इनकी पढाई छूट गयी थी | गाँव में लाकडाउन के दौरान खुले में मोहल्ला कक्षा लेते समय ये दोनों बच्चे मुझे बच्चों को पढ़ाते हुए देखते रहते थे | जब मैंने पूछा कि वे शाला क्यों नहीं आते तो उन्होंने बताया कि उनके माता-पिता कोई नहीं है और वे दूसरों के गाय चराकर अपनी रोजी रोटी कमाते हैं | स्कूल खुलने के बाद ये अपनी गायों को लेकर स्कूल के मैदान में आते और कक्षा के बाहर से बच्चों को पढ़ते देखते रहते| मैं उनके पास जाकर पढाई के महत्व को समझाती |उन्होंने बताया कि वे अपने बूढ़े दादा-दादी के पास रहते हैं | मैं इनके दादा दादी से मिली और उनको समझाने का प्रयास किया कि मानती और उमेश को गाय बैल चराने न भेजकर स्कूल में इनका नाम को लिखवा दें | मैं इनके पास कई बार गई और समझाई| फिर धीरे से इनको समझ में आया और दोनों बच्चों का नाम शाला में लिखवाने के लिए वे तैयार हो गए | इस तरह दोनों बच्चे स्कूल आने के लिए और पढ़ने के लिए जुड़ गए | दोनों भाई-बहन अब बहुत खुश है और आगे अच्छा से पढ़ाई करके कुछ अच्छा काम करना चाहते हैं | वे अपने दादा दादी को अच्छी तरह से देखभाल करना चाह रहे हैं|

प्रमिला जांगड़े पीएस ठाकुर नगर जोबी संकुल सोनपुर विकास खण्ड धर्मजयगढ़ जिला रायगढ़ छत्तीसगढ़ | मो. न. 7999533762

क्या आपके आसपास भी ऐसे शाला से बाहर के बच्चे हैं ? क्या आप इन्हें वापस स्कूल में नहीं लाना चाहेंगे ? किस प्रकार के नवाचारी प्रयासों से इन्हें वापस मुख्यधारा में लाया जा सकता है ?

अभी लाकडाउन के बाद स्कूल खुलने के बाद हमारे स्कूलों/ छात्रावासों में अध्ययन करने वाले सभी बच्चे क्या वापस आ गए हैं ? एक बार पता करके देखें सर्वे करके यह जानने का प्रयास करें कि क्या बड़ी संख्या में बच्चे विशेषकर बड़ी कक्षाओं के बच्चे वापस नहीं आए हैं ? ऐसे बच्चे जो वापस नही आए हैं वे वर्तमान में क्या कर रहे हैं? साथियों हम सबको यह जानना बहुत आवश्यक है | नक्सल प्रभावित क्षेत्र में इस प्रकार के कुछ सर्वे कर आप उपरोक्त जानकारी हमें charchapatra@gmail.com में भेज सकते हैं | आपके सर्वे को अगले अंक में स्थान मिलेगा |

एजेंडा चार: चिंतनशील शिक्षक की डायरी

शिक्षकों को अपने प्रदर्शन में निरंतर सुधार हेतु चिंतनशील होना अत्यंत आवश्यक है। चर्चा पत्र के माध्यम से हमारा हमेशा से यह प्रयास रहा है कि विभिन्न ज्वलंत मुद्दों को शिक्षकों के साथ साझा करते हुए वे उन पर विचार करें और स्थिति में सुधार लाने हेतु मिलकर स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ठोस योजना बनाकर कार्य करें। इस अंक में हम शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पिसेगाँव,दुर्ग की शिक्षिका श्वेता दुबे (8103036400) के चिंतन को आपके साथ साझा कर रहे हैं। इनका स्कूल सौ दिन सौ कहानियों के मामले में प्रदेश में सबसे आगे रहा है।

कोरोना लाकडाउन के बाद जब मैंने अपने बच्चों की कौन्सिलिंग की तब मुझे समझ में आया कि सिस्टम में कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ हो रहा है। उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित अँग्रेजी मे स्तर गिरना का सबसे प्रमुख कारण है शिक्षक का विषय में पकड़ का अभाव ! एक शिक्षक किसी एक विषय में अच्छी पकड़ रख सकता है, सभी में नहीं ! जरुरी नहीं है कि अंग्रेजी पढ़ाने वाला गणित भी पढ़ा ले। प्राथमिक स्तर पर यदि बच्चे अंग्रेजी ठीक से पढ़कर नहीं आएँगे तो उच्च प्राथमिक में उनके साथ बेसिक से शुरु करना पड़ता है। ऐसे में कोर्स कम्प्लीट करने के बारे में हम सोच भी नहीं सकते, सोचना भी नहीं चाहिए।

एक शिक्षक उस स्थिति में अपने आपको लक्जरी महसूस कर सकेगा जब उसे उसी कक्षा के सामग्री को सीखने के अवसर देने हो जिसे वह पढ़ा रहे हों। लेकिन ऐसी लक्जरी का आनन्द हमें नहीं मिल पाता। हमें उन्हें पिछली कक्षाओं के सामग्री को भी पढ़ाना पड़ता है। उसके बिना इस कक्षा की सामग्री समझ में नहीं आ सकती। हम सबको अर्थात आंगनबाडी से लेकर हायर सेकन्डरी तक शाला संकुल प्राचार्य के नेतृत्व में मिलकर कुछ ऐसा करना चाहिए कि एक कक्षा से अगली कक्षा में तभी प्रवेश मिले जब अगली कक्षा वाला शिक्षक उसकी कक्षा में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक बच्चे की जांच कर उसे अपनी कक्षा में प्रवेश योग्य मानकर सर्टिफाई करे। ऐसी स्थिति नहीं होने पर पिछली कक्षा का शिक्षक उसे तब तक अतिरिक्त समय देकर सीखने में सहयोग करें जब तक वह अगली कक्षा के योग्य न हो जाए। यह सिस्टम केवल शाला संकुल प्राचार्य ही अपने अपने क्षेत्र में लागू कर सकते हैं। ऐसा करने से हम उस लक्जरी का आनन्द ले सकेंगे जिसे हम teaching at right level TaRL कहते हैं। मैं हिम्मत नहीं हारुँगी, इस स्थिति में अपने सभी बच्चों को लाकर रहूँगी, इसके लिए अपनी पिछली कक्षा के साथ मेहनत करुंगी !!

शाला समय से अतिरिक्त समय में कुछ काम देकर आप सीखने के time on task को बढ़ा सकते हो ! कक्षा एवं बाहर पियर लर्निंग, छोटे समूह में ग्रुप लर्निंग के साथ पालकों के मोबाइल में प्रतिदिन बच्चों को कुछ पढने के ली भेजकर उन्हें पालकों एवं अपने भाई बहनों के सामने पढने के लिए कहा जाए, और उसके पढने के बारे में घर से कुछ फीडबैक लेने के प्रावधान कर दिए जाएं तो स्कूल और घर दोनों स्थानों से बच्चों को सीखने के अवसर मिल सकेंगे। बच्चों के लर्निंग लोस या सीखने में हुई क्षति को कम करने कुछ अलग से तत्काल करना होगा !

आप अपने संकुल में इस स्थिति में सुधार लाने हेतु क्या करने वाले हैं, मिलकर कुछ ठोस योजना बनाएं !!

एजेंडा पांच: पी एम श्री स्कूल

केंद्र सरकार द्वारा विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करने के उद्देश्य से अत्याधुनिक 'पीएम श्री स्कूल' स्थापित करने की योजना प्रस्तावित की गयी है और ये स्कूल नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) की प्रयोगशाला के रूप में काम करेंगे. इस योजना के अंतर्गत लगभग पन्द्रह हजार स्कूलों के खोले जाने की योजना है. प्रत्येक विकासखंड में एक एलीमेंट्री एवं एक सेकन्डरी स्कूल को इस योजना के अंतर्गत चयनित करते हुए सभी सुविधाओं से लैस किया जाएगा. राज्यों को इस योजना का लाभ उठाने हेतु UDISE के माध्यम से निम्नलिखित बेंचमार्क का पालन करने वाले स्कूलों का चयन करने की सुविधा होगी-

- स्कूल की अपनी अच्छी हालत में पक्का भवन होना चाहिए।
- सुरक्षा नोर्म्स के अनुरूप बाधा-रहित वातावरण होना चाहिए।
- स्कूल में अग्नि-शमन एवं अन्य सुरक्षागत व्यवस्थाएं होनी चाहिए।
- बच्चों की दर्ज संख्या राज्य की औसत दर्ज संख्या से अधिक होनी चाहिए।
- स्कूल में एक बालक एक बालिका शौचालय अनिवार्यतः होना चाहिए।
- स्कूल में स्वच्छ पेयजल के लिए व्यवस्था सुलभ होना चाहिए।
- बच्चों के लिए हाथ धोने की व्यवस्था होना चाहिए।
- स्कूल में पुस्तकालय एवं खेल सामग्री होनी चाहिए।
- स्कूल में बिजली की व्यवस्था होनी चाहिए।

प्रत्येक विकासखंड से इस योजना के अंतर्गत स्कूलों को अपने आपको तैयार कर आनलाइन आवेदन कर अपनी चुनौती प्रस्तुत करनी होगी। आपके द्वारा आनलाइन चुनौती के आधार पर चयनित शालाओं का क्षेत्र निरीक्षण किया जाएगा । शालाओं के चयन के लिए विस्तृत पैरामीटर निर्धारित कर लिए गए हैं। इसे आप पीएम श्री स्कूल योजना में चयन हेतु चुनौती के लिए पैरामीटर एवं स्कोरिंग में क्लिक कर पढ़ सकते हैं। चयनित स्कूलों को निम्नलिखित प्रावधानों का पालन करना होगा-

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विभिन्न घटकों का शत-प्रतिशत क्रियान्वयन करना होगा
- चयनित शालाओं को अपने नाम के साथ पीएमश्री लगाना अनिवार्य होगा
- राज्यों को इन शालाओं में बाधा-रहित सुरक्षित वातावरण उपलब्ध करवाया जाना होगा
- राज्यों को इन शालाओं को ग्रीन शालाओं के रूप में विकसित करने की दिशा में काम करना होगा
- राज्यों को इन शालाओं में नवाचारी शिक्षण प्रविधियों जैसे अनुभव-आधारित शिक्षण, कला-आधारित शिक्षण, खेल-आधारित, खिलौना-आधारित शिक्षण प्रविधियों को लागू करवाना अनिवार्य होगा (Experiential learning/ Art based education/spots-based/Toy-based pedagogy)
- राज्यों को शालाओं का आकलन उनके लर्निंग आउटकम के आधार पर करना होगा और इन शालाओं में समग्र आकलन (Holistic Report Card) को भी लागू करना होगा
- कार्यक्रम के दो वर्षों के भीतर इन शालाओं को शून्य ड्राप-आउट करना होगा
- एलिमेंटरी स्तर पर RTE act अनुसार PTR norms का पालन करना होगा

यदि आप अपने स्कूल को पीएम श्री स्कूल (PM Schools for Rising India) के रूप में विकसित होते देखना चाहते हों तो आज से ही इस योजना का अध्ययन कर अपने स्कूल से चुनौती देने हेतु तैयार कर आनलाइन पोर्टल में अपना आवेदन भरने की तैयारी कर लेवें। वैसे सभी स्कूलों को इन क्रायटेरिया का अध्ययन कर उनका पालन अपने अपने स्कूलों में करने का प्रयास करना चाहिए !

एजेंडा छह: समुदाय के नेतृत्व में मूलभूत कौशल सीखना

आप सभी ने दिनांक 10 अगस्त को अपने शाला प्रबन्धन समिति एवं समुदाय की एक बैठक आयोजित की होगी। दिनांक 10 अगस्त की बैठक के एजेंडा क्रमांक तीन के अनुसार सभी SMC को एक प्रायोजना अपने हाथ में लेकर उसका क्रियान्वयन करना है। अगली बैठक की तिथि दिनांक 14 नवंबर है। इसके पूर्व इस माइको-परियोजना को संपन्न करवाया जाना है। माह नवंबर में इस वर्ष का असर भी होगा। ऐसे में आपके द्वारा प्रत्येक गाँव में इस दिशा में कार्य हो तो हम अगले असर में बहुत अच्छा प्रदर्शन क्र सकेंगे। गत बैठक के एजेंडा तीन के अनुसार-

"माह अगस्त से अक्टूबर तक सभी बच्चों को उनके आयु-अनुरूप वर्णमाला, अक्षर, शब्द, वाक्य एवं कहानी पढ़ पाना, अंक पहचानना, गिनती, सर जोड़-घटाव-गुणा-भाग आदि पर अच्छे से अभ्यास करते हुए अपने क्षेत्र के सभी शाला जाने एवं नहीं जाने वाले बच्चों को इन दक्षताओं को अच्छे से हासिल करवाए जाने की दिशा में अत्यधिक मेहनत करवाये जाने हेतु एक ठोस योजना बनाकर क्रियान्वयन"

इस हेतु शाला प्रबन्धन समिति द्वारा लिए जाने वाली प्रायोजना में निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन सुनिश्चित करें-

- सबसे पहले अपने अपने क्षेत्र के सभी 6-14 आयु वर्ग के बच्चों की पहचान कर उनका टेस्ट लेकर यह देखना कि बच्चे वर्तमान में किस स्तर पर हैं
- क्षेत्र में कुल 6-14 आयु वर्ग के बच्चों में से कितने कौन से स्तर पर हैं, इसका विवरण समुदाय/ पंचायत एवं भीड़-भाड वाले इलाकों में प्रदर्शित कर सुधार हेतु समुदाय से समर्थन की मांग करना
- बच्चों को उनके आयु एवं कक्षा अनुरूप स्तर पर लाए जाने अभ्यास सामग्री, गतिविधियों का आयोजन, वर्णमाला एवं गिनती के साथ साथ मूलभूत दक्षताओं के विकास पर कार्य
- आगामी तीन माह तक फोकस कर सभी बच्चों को उनके आयु अनुरूप दक्षताओं पर विशेष कार्य करने हेतु शाला समय एवं शाला समय से अतिरिक्त समय में विशेष कोचिंग दिलवाना
- जब आपकी शाला/ आपके संकुल में सभी 6-14 आयु वर्ग के बच्चे उनके आयु-अनुरूप दक्षताओं को प्राप्त कर लेवें तो तथ्यों की जाँच-पड़ताल कर उसके आधार पर अपने अधिकारियों को अपनी शाला/ संकुल में आकर जाँच करने की चुनौती देवें ताकि उन्हें हम "हमारे नायक " में स्थान दे सकें।
- बच्चों को शिक्षकों या विशेषज्ञ स्थानीय समुदाय के सहयोग से स्पोकन अंग्रेजी में साधारण बोलचाल में अभ्यास के अवसर देते हुए बच्चों में शुरुआत से ही भाषाई कौशल का विकास करना
- इन माइक्रो-प्रोजेक्ट के समय सीमा अर्थात (सितंबर से नवंबर) के बीच प्रत्येक बच्चे के साथ इस प्रकार से मेहनत करवाई जाए कि प्रत्येक बच्चे को मूलभूत दक्षताएं अच्छे से हासिल हो जाए चाहे वह स्कूल जाने वाले बच्चे हों या शाला से बाहर के बच्चे हों।

स्थानीय स्तर पर जिले/विकासखंड एवं संकुल में इस प्रायोजना को स्थानीय स्वरूप देते हुए इसके माध्यम से सभी 6-14 आयु वर्ग के बच्चों को इसका लाभ अवश्य दिलवाएं।

एजेंडा सात: हमर तिरंगा

- हर घर तिरंगा" कार्यक्रम के बैग लेस शनिवार के तहत स्कूल में फैन्सीड्रेस प्रतियोगिता हुई। जिसमें बच्चे शहीद भगत सिंह,शहीद गुण्डाधुर, महात्मा गांधी,चाचा नेहरू,रानी लक्ष्मी बाई,रानी दुर्गावती, चंद्रशेखर आजाद,बाबा अम्बेडकर बने।

  -रिंकल बग्गा, शा.प्रा.शाला धरमपुर(स.),विकासखंड-बागबाहरा,ज़िला-महासमुन्द, मोब.न.-9926819169

- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मरौद में 'घर घर तिरंगा कार्यक्रम के दौरान एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। पूरा गाँव 'घर घर तिरंगा' 'हर घर तिरंगा ' जैसे नारों से गूँज उठा, 'तिरंगा हमारी शान हैं, आजादी की पहचान है। ' कहते हुए बालक, पालक शिक्षक, पूरे गाँव का भ्रमण किया। इसी दौरान मैंने देखा कि गाँव के कुछ घरों में तिरंगा फहराने को लेकर समस्या है तो मैंने उनके घर जाकर सही तरीके से झंडा फहराना समझाया गया। तत्पश्चात गाँव के चौराहे में तिरंगा किस प्रकार ससम्मान उतारा जाए बताया गया। । हमर तिरंगा का यह अनुभव स्मरणीय रहेगा।

  -ज्योति मगर(व्याख्याता), शा.उस माँ.वि. मरौद,ब्लॉक कुरूद, जिला -धमतरी- 7049538550

- छग मे हमर तिरंगा कार्यक्रम के दौरान बहुत अनुभव देखने मिल रहे है। मैने एक वीडीयो बच्चो को दिखाया था कि कैसे तिरंगा की फोल्डिंग कर उसे घर मे रखना है। वह बच्चो ने बडे ध्यान व सावधानी से सीख कर साझा किया।

  -चानी ऐयरी, शा.पू.मा.शाला ,पंधी वि.खं.मस्तूरी जिला बिलासपुर- 9039935669

- इस कार्यक्रम का अनुभव बेहतरीन है ऐसी गतिविधियां समय समय पर आयोजित होनी चाहिए। इससे बच्चो की छुपी हुई प्रतिभा बाहर आती हैं और निखरती है और उन्हें मनोरंजन के माध्यम से इतिहास को जानने का मौका मिलता है।

  -गीतिका नाग, आदर्श बालक आश्रम शाला, पोंडम, दंतेवाडा- 6263833583

- हमर तिरंगा कार्यक्रम से समुदाय एवं स्कूल के बीच जुड़ाव मजबूत हुआ । इस कार्यक्रम को ग्रामवासियों, जनप्रतिनिधियों एवं ग्राम विकास समिति का व्यापक समर्थन मिला।

  - कमल नारायण यादव, प्रधानपाठक, शासकीय प्राथमिक शाला भावा, महासमुंद, मो. -9669610294

- यह एक अच्छा प्रयास है, कोरोना काल के कारण काफी समय से कुछ कार्यक्रम न होने के कारण ,बच्चो के साथ साथ शिक्षको में भी अच्छा उत्साह है इस कार्यक्रम हेतु। धन्यवाद!

  -सविता ध्रुवे, शिक्षक L.B., शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला फुलझर, राजनांदगांव, मो 9575797958

- हमर तिरंगा कार्यक्रम में सरकारी स्कूलों में पढने वाले बच्चों के पालक, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे अपने बच्चों के लिए कापी पेन भी खरीद कर नहीं देते, ऐसे बच्चों ने फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में आकर्षक वेशभूषा से पूरे प्रदेश में धूम मचाई !

  - मधु सोनी, शासकीय पू. मा. शाला, सोनपुरी (रानी), जिला- कबीरधाम, मो. 9302812194

- हमर तिरंगा के अंतर्गत बच्चों को दिखाई जा रही फिल्म गांधी को देखने थियेटर आ रहे बच्चों में गजब का उत्साह दिखाई दे रहा है। इस कार्य्रकम के माध्यम से जनप्रतिनिधि भी स्कूलों एवं बच्चों से जुड़कर उन्हें प्रोत्साहित करने थियेटर में आ रहे हैं।

  -अभय जायसवाल, जिला शिक्षा अधिकारी, दुर्ग -9329688484

एजेंडा आठ: उपचारात्मक शिक्षण

विगत दो वर्षों से हुए लाकडाउन की वजह से सीखने में हुए नुकसान की भरपाई करने हेतु लर्निंग रिकव्हरी कार्यक्रम अथवा उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जा रही है। उपचारात्मक शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रमुख रूप से शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच में ही होती है अथवा हो सकती है। यह कार्यक्रम कक्षा छठवीं से बारहवीं तक के सभी बच्चों के लिए आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों में फोकस किया जाएगा -

- मूलभूत दक्षताओं (FLN) की संप्राप्ति सुनिश्चित करना एवं पीछे छूट रहे दक्षताओं पर अभ्यास
- वर्तमान कक्षा से दो पिछली कक्षाओं की आगे सीखने में सहायक उपयोगी लर्निंग आउटकम पर विशेष ध्यान
- वर्तमान कक्षा के महत्वपूर्ण लर्निंग आउटकम की प्राप्ति हेतु विशेष गतिविधियाँ
- विद्यार्थियों की सामाजिक, भावनात्मक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देने हेतु गतिविधियाँ

विद्यार्थियों के साथ कार्य करते समय निम्नलिखित शैक्षणिक प्रक्रियाओं पर ध्यान दिया जाएगा

- विद्यार्थियों को लिखित अभ्यास के लिए पर्याप्त अवसर देने होंगे। इस हेतु उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रतिदिन बच्चों से घर पर हस्तलेखन का अभ्यास एवं हाई-हायर सेकन्डरी स्तर पर जीवन कौशल के अभ्यास पुस्तिकाओं पर शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों से घर पर अभ्यास पुस्तिका पर कार्य करवाया जाए।
- विद्यार्थियों को नियमित रूप से पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाओं का उपयोग करते हुए समझ के साथ सीखने के अवसर प्रदान किये जाएं। शिक्षकों को अपने विषयवस्तु के अध्यापन करते समय सहायक सामग्री के उपयोग हेतु शाला अनुदान से बजट उपलब्ध करवाया जाए।
- शिक्षकों को स्मार्ट कक्षाओं के उपयोग एवं टेक्नोलोजी का कक्षा में उपयोग हेतु NIC एवं TISS के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाएगा। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम On demand होंगे, आप इसकी मांग कर सकते हैं।
- विद्यार्थियों को एक दूसरे से सीखने हेतु पियर लर्निंग (Peer Learning) पद्धति का उपयोग किया जाएगा।
- बेहतर समझ हेतु अनुभव-आधारित शिक्षण (Experiential Learning) का भी उपयोग किया जाएगा।
- कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यार्थियों का बेसलाइन एवं अंत में एंडलाइन टेस्ट का आयोजन किया जाएगा।
- इन परीक्षाओं में पूछे जाने वाले प्रश्न मुख्य रूप से फाउंडेशनल/ दो कक्षाओं के पूर्व के एवं वर्तमान कक्षाओं के लर्निंग आउटकम पर आधारित होंगे।
- प्रश्नों का स्वरूप राष्ट्रीय उपलब्धि परीक्षण के अनुसार उसी पैटर्न में आयोजित किया जाएगा।
- प्राचार्यों/ प्रधानपाठकों को बच्चों के लिए उनकी आवश्यकतानुसार विशेष कोचिंग कक्षाओं के आयोजन की सुविधा दी जाएगी। इस हेतु संकुल के भीतर के विषय विशेषज्ञ शिक्षकों/ जिन विषय के शिक्षक शाला में उपलब्ध न हों, ऐसे महत्वपूर्ण विषयों के लिए शिक्षकों को भी समुदाय से उपलब्ध करवाया जाएगा।
- विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक एवं मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उन्हें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं जैसे निबन्ध लेखन, भाषण, वाद-विवाद, कला, हस्तलेख, नाटक एवं संगीत में शामिल करते हुए उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाएगा।

एजेंडा नौ: क्या इन्हें आजमा सकते हैं ?

FLN के लक्ष्य प्राप्त करने की तिथि करीब आते जा रही है | हम सबको इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बहुत सुनियोजित तरीके से मेहनत करनी होगी | परंपरागत तरीकों से हटकर य उनके साथ-साथ कुछ अलग-अलग तरीके भी अपनाने होंगे | एक विचार मन में आया है, आपसे शुरुआती विचारणीय बिंदु साझा किया जा रहा है | इसके आधार पर आप अपने अपने क्षेत्र में कुछ विशेष योजना बनाकर उसका क्रियान्वयन कर हमें charcapatra@gmail.com पर लिखकर ईमेल से भेज सकते हैं –

1. यदि आपके स्कूल में दो तीन शिक्षक हैं तो क्या हम कक्षा एक की जिम्मेदारी एक शिक्षक को, कक्षा दो की जिम्मेदारी दूसरे शिक्षक को और फिर कक्षा तीन की जिम्मेदारी पहले शिक्षक को देते हुए यह व्यवस्था कर सकते हैं कि प्रत्येक कक्षा में उस कक्षा के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम को बहुत अच्छे से सभी बच्चों द्वारा हासिल किए जाने पर ही उसे आप अपनी कक्षा में लेंगे | यदि बच्चों ने आपके द्वारा प्रवेश लेते समय लिए गए टेस्ट में संतोषप्रद प्रदर्शन नहीं किया तो उस शिक्षक को उन बच्चों के साथ पुनः अतिरिक्त प्रयास कर उस लायक बनाकर आप पूरी तरह संतुष्ट होने पर ही उसे अगली कक्षा में प्रवेश दिलवाएंगे | इस आइडिया को लागू करने में बहुत से पेंच होंगे | यह आपको अपने संकुल में चर्चा कर देखना है कि इसके तमाम पेंचों को दूर करते हुए कैसे प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दे सकेंगे ? क्या हम कम से कम आंगनबाडी के अंतिम वर्ष से लेकर कक्षा तीन तक इस व्यवस्था को शुरुआती दौर में लागू कर सकते हैं ? **सोचें और करें !!**
2. आपने ODF village ODF Plus village अवश्य सुना होगा | इस पर बड़ा जोर होता है और समयबद्ध तरीके से इसे लागू करने के बाद जिलों को ODF जिला घोषित किया जाता है | क्या संकुल या विकासखंड स्रोत समन्वयक के रूप में आप भी अपने क्षेत्र को इसी प्रकार से किसी योजना का नाम देकर कुछ बिन्दुओं का निर्धारण कर उन क्रायटेरिया का पालन करने पर स्कूल, संकुल को इसी प्रकार से कुछ नाम देकर एक निर्धारित समय में सभी शालाओं या गाँव को ODF जैसे घोषित कर सकते हैं | **आप ऐसा कुछ प्लान करें और हमें भी अपने अनुभव और सफलता साझा करें !!**

एजेंडा दस: इस माह के फोकस कार्य

इस माह हम सबको मिलकर इन बातों पर विशेष ध्यान देते हुए इन लक्ष्यों को शत-प्रतिशत प्राप्त करना है-

1. सभी स्कूल अपने क्षेत्र में समुदाय के साथ मिलकर माइक्रो इम्प्रूवमेंट प्लान बनाकर मूलभूत भाषाई एवं गणितीय कौशलों पर फोकस कर आगामी तीन माह तक नियमित काम होना है | ध्यान रखें कोई गाँव नहीं छूटना चाहिए | माह नवंबर में होने वाले असर में आपका स्थान सबसे बेहतर होना चाहिए !!
2. सभी शिक्षकों को टेलीग्राम के अकादमिक चेनल में जोड़ें ताकि प्रत्येक महत्वपूर्ण सूचना सीधे उन्हें मिलने की सुविधा मिले और आपको उसका लाभ मिले – https://t.me/CGSAMAGRASHIKSHAACADEMICINFO
3. संकुल के सभी शिक्षकों को चर्चा पत्र डाउनलोड कर पढने हेतु प्रेरित करें cgschool.in के मुखपृष्ठ से
4. स्कूल रेडीनेस के लिए साझा किए गए 90 दिवसीय गतिविधि वाले आनलाइन मोड्यूल को लागू करना|
5. अंगना म शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत मेलों का आयोजन कर उनकी प्रविष्टि करते हुए शत-प्रतिशत प्राथमिक शालाओं में इस कार्यक्रम को अच्छे से लागू करवाना |